

न्यायालय अतिरिक्त संभागीय आयुक्त, जोधपुर
पीठासीन अधिकारी-सुनिता चौधरी, आर.ए.एस

राजस्व अपील संख्या 05/2020

अपीलाण्ट	बनाम	रेस्पोंडेन्ट्स
1. गजेसिंह पुत्र स्व० मोडसिंह 2. वासुदेव सिंह पुत्र स्व० मोडसिंह 3. बलदेव सिंह पुत्र स्व० मोडसिंह 4. सुखदेव सिंह पुत्र स्व० मोडसिंह 5. हडमानसिंह पुत्र स्व० मोडसिंह (जाति राजपूत, निवासी संजय कॉलानी, बासनी कृषि मण्डी के पीछे, जोधपुर)		1. फतेहसिंह भाटी पुत्र मोडसिंह (गोदपुत्र सिमरथ सिंह) जाति राजपूत, निवासी ग्राम मालसिंह की सिड, तहसील बाप (जोधपुर) वर्तमान जिला फलौदी हाल निवासी-संजय कॉलानी, बासनी कृषि मण्डी के पीछे, जोधपुर 2. राज० सरकार जरिये तहसीलदार बाप (जोधपुर) वर्तमान जिला फलौदी

अपील अन्तर्गत धारा 76 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 विरुद्ध आदेश
दिनांक 19.07.2016 उपखण्ड अधिकारी बाप राजस्व अपील संख्या 04/2015
बनवान फतेहसिंह बनाम गजेसिंह वगैरा

उपरिस्थित-

1. श्री जगदीश चन्द्र विश्‍नोई, वकील अपीलांट
2. श्री दयाराम चौधरी, वकील रेस्पोंड सं० 1
3. श्री नवलसिंह दहिया, राजकीय अधिवक्ता रेस्पोंड 2 की ओर से

निर्णय

दिनांक 19.01.2026

यह अपील राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 76 के अन्तर्गत
अपीलांट्स ने उपखण्ड अधिकारी बाप (जोधपुर) द्वारा राजस्व अपील संख्या 04/2015
अनवान फतेहसिंह बनाम गजेसिंह में पारित आदेश दिनांक 19.07.2016 के विरुद्ध
प्रस्तुत की है।

संक्षेप में प्रकरण के तथ्य इस प्रकार है कि ग्राम मालसिंह की सिड, तहसील
फलौदी वर्तमान तहसील बाप के खसरा नम्बर 622 रकबा 30.05 बीघा एवं खसरा
नम्बर 131 रकबा 113.06 बीघा भूमि राजस्व रेकर्ड में सिमरथ सिंह पुत्र पन्नेसिंह के
1/2 हिस्सा एवं मोडसिंह पुत्र सुल्तान सिंह के 1/2 हिस्सा में दर्ज थी। जो सिमरथ
सिंह के फौत हो जाने पर जरिये ना०क०सं० 224 दिनांक 6.12.76 में अंकित वंशावली

du
राजस्थान न्यायालय आयुक्त
जोधपुर

वृक्ष-पन्नेसिंह के अनुसार उत्तराधिकारी मोडसिंह पुत्र सुल्तानसिंह के नाम दर्ज हुई। उक्त स्वीकृत नामान्तरकरण के विरुद्ध रेस्पो०सं० 1-फतेहसिंह द्वारा अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत राजस्व प्रथम अपील संख्या 04/2015 में पारित निर्णय दिनांक 19.07.2016 द्वारा अपील अंदर मियाद शुमार कर अपीलाधीन ना०क०सं० 224 निरस्त कर, प्रकरण तहसीलदार बाप को वादग्रस्त खसरान की भूमि में मुतवफी सिमरथ सिंह के वारिसान की जांच कर, पक्षकारों को सुनवाई का समुचित अवसर दिया जाकर, सिमरथसिंह के 1/2 हिस्से में नामान्तरकरण की कार्यवाही हेतु प्रतिप्रेषित किया गया। जिससे व्यथित होकर अपीलांट-रेस्पो०सं० 1 से 5-गजेसिंह वगैरा ने राज० भू-राजस्व अधिनियम की धारा 76 के तहत यह द्वितीय अपील न्यायालय हाजा के समक्ष प्रस्तुत की गई।



अपील के साथ अपील प्रस्तुत करने में हुए विलंब को क्षमा करने हेतु मियाद अधिनियम की धारा 05 के तहत प्रार्थना पत्र मय शपथ पत्र प्रस्तुत किया गया, जो न्यायहित में स्वीकार कर प्रकरण का गुणावगुण पर परीक्षण किया गया।

बहस सुनी गई। वकील अपीलांट ने अपनी बहस में अपील मीमों में उल्लेखित तथ्यों को दौहराते हुए मुख्यतः यह आग्रह किया कि अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष रेस्पो०सं० 1-अपीलांट द्वारा इस आधार पर अपील प्रस्तुत की गई कि राजस्व ग्राम कानसिंह की सिड वर्तमान ग्राम खिदरत तहसील बाप के ख०नं० 622 व 131 की भूमि राजस्व रेकॉर्ड में अपीलांट एवं रेस्पो० के पूर्वजों के नाम दर्ज थी, जिसके मूल खातेदार सिमरथसिंह वल्द पन्नेसिंह व मोडसिंह वल्द सुल्तानसिंह थे। सिमरथसिंह के फौत होने पर मोडसिंह को उनका उत्तराधिकारी बताकर ना०क०सं० 224 स्वीकार करवा लिया गया, जबकि सिमरथसिंह का एक गोद पुत्र रेस्पो०सं० 1-फतेहसिंह है, जिनका नाम सिमरथसिंह के फौतेदगी ना०क० में 1/2 हिस्से में दर्ज होना चाहिए था एवं मोडसिंह के फौत होने पर उनके वारिसान अपीलांट-रेस्पो०सं० 1 से 5 के नाम उनके 1/2 हिस्से में दर्ज होना चाहिए था। अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत उक्त अपील आंशिक स्वीकार कर अपीलाधीन जैर ना०क०सं० 224 को निरस्त कर प्रकरण तहसीलदार बाप को वादग्रस्त खसरान की भूमि में मुतवफी सिमरथसिंह के वारिसान की जांच कर, सिमरथसिंह के 1/2 हिस्से में नामान्तरकरण की कार्यवाही हेतु रिमाण्ड

due
राजस्थान न्यायाधीय जायदत
जोधपुर

कर दिया गया। जो उपलब्ध दस्तावेजों के अध्ययन के बिना पारित होने से काबिले निरस्त है।

वस्तुतः पन्नेसिंह के दो पुत्र सिमरथसिंह व सुल्तानसिंह थे। सिमरथसिंह लाऔलाद फौत हो गये थे। सुल्तानसिंह के पुत्र मोडसिंह थे तथा मोडसिंह के पुत्र अपीलांट व रेस्पो०सं० 1 है। वक्त बंदोबस्त राजस्व रेकॉर्ड में सिमरथसिंह व मोडसिंह के नाम ख०नं० 622 व 131 दर्ज थे। सिमरथसिंह ला—औलाद फौत हुए, जिन्होंने अपने जीवन काल में किसी को गोद नहीं लिया था। अपीलार्थीगण व रेस्पो०सं० 1 स्व० मोडसिंह के पुत्र है तथा मोडसिंह के फौत होने पर रेस्पो०सं० 1 व अपीलार्थीगण के नाम राजस्व रेकॉर्ड में दर्ज हुए, अगर रेस्पो०सं० 1 सिमरथसिंह का गोद पुत्र होता तो मोडसिंह की जायदाद में अपना नाम दर्ज नहीं करवाता। रेस्पो०सं० 1 की नियत में खोट आने के कारण एवं सिमरथसिंह की जायदाद हड़पने के उद्देश्य से गोद पुत्र बनने का प्रयास कर रहा है, जो गलत एवं विधिविरुद्ध है। रेस्पो०सं० 1 द्वारा अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष मियाद बाहर अपील प्रस्तुत की गई, जिसमें धारा 5 का प्रार्थना पत्र गलत तथ्यों पर आधारित होने के बावजूद मंजूर कर लिया गया।

फतेहसिंह अपने आप को सिमरथसिंह का गोद पुत्र बता रहा है, जबकि उसके तमाम दस्तावेज यथा आधार कार्ड, राशनकार्ड, मार्कशीट, मतदाता सूची, पेनकार्ड, वैवाहिक कार्ड इत्यादि में पिता का नाम मोडसिंह उर्फ भोमसिंह दर्ज है, न कि फतेहसिंह पुत्र सिमरथसिंह। इसके अलावा सिमरथसिंह, फतेहसिंह के जन्म से पूर्व फौत हो चुके थे, इसलिए फतेहसिंह का सिमरथसिंह के गोद पुत्र होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता है। उक्त अपील मात्र अपीलार्थीगण को परेशान करने की नियत से की गई। प्रकरण में वकील अपीलांट द्वारा प्रार्थना पत्र अंतर्गत आदेश 41 नियम 27 सपटित धारा 151 सीपीसी के साथ फार्म नं० 3 में उल्लेखित पहचान दस्तावेजों की प्रतियां प्रस्तुत की गईं।

वकील अपीलांट ने यह भी निवेदन किया कि गोद पुत्र लेने व देने की वर्षों पुरानी एक परिपाटी है, जिसमें गांव परिवार एवं रिश्तेदारी व भाई गिनाईत को बुलाकर सामाजिक रीति रिवाज के अनुसार किसी भी व्यक्ति को गोद पुत्र लिया जाता है, तो उसकी लिखा पढी होकर गोदनामा रजिस्टर किया जाता है तथा बहीभाट में उसका इन्द्राज किया जाता है। उप जिलाधीश (जागीर) जोधपुर को कोई कानूनी अधिकार



du
जोधपुर
जोधपुर

गोदनामें के बारे में नहीं दिये गये, ऐसे दस्तावेज बनावटी है। जिस सन् को दस्तावेज को आधार मानकर अधीनस्थ न्यायालय ने आलौच्य आदेश पारित किया है, वह दस्तावेज कानूनन कोई महत्व नहीं रखता। मात्र अस्पष्ट फोटो कॉपी को आधार मानकर अधीनस्थ न्यायालय ने आलौच्य निर्णय पारित कर दिया गया, जो निरस्त योग्य है। अतः अपील स्वीकार कर अपीलाधीन आदेश निरस्त फरमाने का आग्रह किया गया।

जवाब में रेस्पोंसं० 1 के अधिवक्ता द्वारा अपनी बहस में मुख्यतः यह आग्रह किया कि मोडसिंह पुत्र सुल्तानसिंह के नाम ग्राम मालमसिंह की सिड़ के वादग्रस्त ख०नं० 622 व 131 की दर्ज खातेदारी भूमि, पूर्व में सिमरथसिंह पुत्र पन्नेसिंह हिस्सा 1/2 तथा मोडसिंह पुत्र सुल्तानसिंह हिस्सा 1/2 दर्ज थी। सिमरथसिंह ने अपने जीवन काल में रेस्पों को विधिक प्रक्रिया अपनाकर गोद लिया था। सिमरथसिंह का वर्ष 1961 में देहांत हो गया तथा रेस्पों का जन्म दिनांक 20.11.1954 को हुआ, तब रेस्पों नाबालिग था। इसलिए उपरोक्त दस्तावेज में उसके जैविक पिता मोडसिंह उर्फ भोमसिंह का नाम शुरू से लिखवाया हुआ है, जो कालांतर में चला आ रहा है तथा यह उसकी जैविक पहचान है। उक्त दस्तावेज पूर्व से ही अपीलांट के पास उपलब्ध थे, जो इनके मददगार साबित नहीं है।

अपीलांट एवं रेस्पों के पूर्वज जागीरदार थे, जिस कारण मुआवजा तय करने के लिए जिलाधीश (जागीर) जोधपुर के न्यायालय में उत्तराधिकार बाबत प्रकरण संख्या 84/1969 चला एवं विधि अनुसार न्यायालय द्वारा फतेहसिंह को बाद सुनवाई/कार्यवाही रिकॉर्ड खातेदार सिमरथसिंह पुत्र पन्नेसिंह का गोद पुत्र होने का उत्तराधिकारी प्रमाण पत्र क्रमांक 1717 दिनांक 11.09.1969 जारी किया गया। जिससे रेस्पों-फतेहसिंह ने मुआवजा राशि प्राप्त की तथा उक्त उत्तराधिकार प्रमाण रेस्पों फतेहसिंह के जैविक पिता मोडसिंह ने दिनांक 06.10.1969 को अपने हस्ताक्षर कर प्राप्त किया, जो उप जिलाधीश (जागीर) जोधपुर की आदेशिका दिनांक 11.09.1969 से साबित है। इससे पूर्व सिमरथसिंह के देहान्त होने के कुछ दिन बाद ही रेस्पों-फतेहसिंह के जैविक पिता ने तहसीलदार फलौदी को दिनांक 01.05.1961 को रेस्पों-फतेहसिंह के नाम सिमरथसिंह की कृषि भूमि का नामान्तरण के लिए लिखा गया था।



जोधपुर
जोधपुर

रेस्प० अधिवक्ता द्वारा जवाब प्रार्थना पत्र अंतर्गत आदेश 41 नियम 27 सपटित धारा 151 सीपीसी के साथ फार्म नं० 3 में उल्लेखित दस्तावेजों की प्रतियां प्रस्तुत की गई।

इस प्रकार रेस्प०-फतेहसिंह की नाबालिग अवस्था का नाजायज फायदा उठाकर अपीलार्थीगण के पिता ने सिमरथसिंह को लाऔलाद फौत होना बताते हुए, उक्त खसरान की भूमि में सिमरथसिंह का 1/2 हिस्सा भूमि का ना०क०सं० 224 अपने स्वयं के हक में स्वीकृत करवा लिया गया, जबकि सिमरथसिंह का विधिक वारिसान रेस्प० उस समय मौजूद था। उक्त ना०क० हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के प्रावधानों के विपरित होने से अधीनस्थ न्यायालय द्वारा गोदनामा प्रमाण-पत्र के आधार पर इसे निरस्त कर दिया गया। जो विधिसम्मत होने से अपील अपीलांट खारिज कर अपीलाधीन आदेश यथावत रखने का आग्रह किया।

उभय पक्ष के अधिवक्ताओं की बहस पर मनन किया एवं पत्रावली व उसके सलंगन दस्तावेजों का ध्यान पूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकट तथ्यों के आधार पर अधीनस्थ न्यायालय द्वारा पारित अपीलाधीन आदेश विधिसम्मत होने से इसमें किसी प्रकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

अतः उपर्युक्त विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर अपील अपीलांट स्वीकार योग्य नहीं पायी जाने से तदनुसार खारिज की जाती है तथा अधीनस्थ न्यायालय उपखण्ड अधिकारी बाप द्वारा राजस्व अपील संख्या 04/2015 बअनवान फतेहसिंह बनाम गजेसिंह वगैरा में पारित अपीलाधीन आदेश दिनांक 19.07.2016 यथावत रखा जाता है।

निर्णय आज दिनांक 19-1-26 को खुले न्यायालय सुनाया गया।

du
19/1/26.

(सुनिता चौधरी)

अतिरिक्त संभागीय आयुक्त
अतिरिक्त जयपुरीय आयुक्त
जयपुर